Ans 1) प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता एवं स्थिति

प्रस्तावना:
प्रशासनिक क्षेत्र एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमे सरकार और नागरिकों के बीच संवाद और सहयोग के लिए कई प्रकार की जरूरत होती है। इस संवाद को समझने और इसके लिए तथा सरकारी दस्तावेजों और सूचनाओं को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवादित करने की आवश्यकता होती है। इस निबंध में हम प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता और स्थिति के बारे में विचार करेंगे और यह देखेंगे कि इसका महत्व क्या है।

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता:
प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता एक आवश्यकता है जो विभिन्न कार्यों, सेवाओं, और कानूनी दस्तावेजों के संचालन में होती है। निम्नलिखित कुछ क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता होती है:

i) सरकारी नीतियां और योजनाएँ: सरकार अक्सर अपनी नीतियों और योजनाओं को नागरिकों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करती है। इससे नागरिकों को सरकार की योजनाओं और उनके अधिकारों के बारे में सही जानकारी मिलती है।

ii) कानूनी दस्तावेज : कानूनी दस्तावेजों का अनुवाद महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि नागरिक अपने कानूनी अधिकारों और पहलों को समझ सकते हैं। अनुवाद के बिना, यह दस्तावेजों का सही समझना मुश्किल हो सकता है।

iii) शिक्षा : शिक्षा क्षेत्र में भी अनुवाद की आवश्यकता होती है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि नागरिक अपने कानूनी अधिकारों को उनकी मातृभाषा में उपलब्ध कराने से उनकी शिक्षा में सुधार हो सकता है।

iv) विदेशी संबंध : अन्य देशों के साथ व्यापार, विज्ञान, सांस्कृतिक विनिमय और अन्य क्षेत्रों में भी अनुवाद की आवश्यकता होती है। इससे द्विपक्षीय संबंध मजबूत होते हैं और विश्व में सहयोग बढ़ता है।

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की स्थिति :
प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की स्थिति देश के आपसी संबंधों, सरकार की नीतियों और नागरिकों की भाषाई जरूरतों के आधार पर भिन्न हो सकती है। निम्नलिखित में कुछ स्थितियाँ अनुवाद के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

i) राज्य भाषा : कुछ देशों में राज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में एक भाषा का चयन किया जाता है, और सभी सरकारी काम उसी भाषा में होते हैं। इस स्थिति में अनुवाद की आवश्यकता कम होती है।

ii) बहुभाषी समाज : कुछ देशों में बहुभाषी समाज होते हैं, जहाँ विभिन्न भाषाएँ और जीवन शैलियों का एक साथ अस्तित्व होता है। इस स्थिति में, सरकार को विभिन्न भाषाओं में सेवाएँ प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

iii) अंतर्राष्ट्रीय संबंध : एक देश के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। द्विपक्षीय संबंधों के लिए आधिकारिक संदेशों का अनुवाद आवश्यक होता है ताकि विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद सुगम और स्पष्ट हो सके।

iv) तकनीकी अनुवाद : प्रशासनिक क्षेत्र में तकनीकी दस्तावेज और सूचनाएँ भी होती हैं जैसे कि टेक्निकल मैनुअल्स, सॉफ्टवेयर डॉक्यूमेंटेशन और अन्य तकनीकी सामग्री। इसके अनुवाद में विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इससे सांस्कृतिक समृद्धि और विविधता को प्रमोट किया जा सकता है।

समस्याएँ और चुनौतियाँ: प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद करते समय कई समस्याएँ और चुनौतियाँ आ सकती हैं:

i) भाषाई विविधता: एक देश में कई भाषाएँ होती हैं, और इनमें से कुछ की आधिकारिक भाषा का चयन करना कठिन हो सकता है।

ii) विशेषज्ञता की आवश्यकता: विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता होती है, और इसमें तकनीकी, कानूनी, चिकित्सा और अन्य विशेषज्ञता की आवश्यकता हो सकती है।

समापन: प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता और स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी सेवाएँ नीतियाँ और जानकारी सभी नागरिकों के लिए सुलभ और समझने में उपलब्ध होती हैं। अनुवादकों की जरूरत होती है ताकि भाषाओं के संबंध में कई सारी संवादात्मक और अनौपचारिक बातचीत संचालित की जा सके।

Ans 2.) संसद में अनुवाद: भारतीय लोकतंत्र में भाषाओं की गहरी एकता

प्रस्तावना:
संसद भारतीय लोकतंत्र की मूर्ति है, जहाँ विभिन्न प्रकार की विचारधारा, जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र से आए लोग एक साथ आकर्षित होते हैं। इसलिए, संसद में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह विभिन्न भाषाओं में बातचीत का माध्यम होता है और देश के विकास में सहायता प्रदान करता है। इस विषय पर यह टिप्पणी विस्तृत रूप से प्रस्तुत करती है, जहाँ हम संसद में अनुवाद की भूमिका, इसके महत्व और चुनौतियों के बारे में विचार करेंगे।

संसद में अनुवाद की भूमिका:
संसद में अनुवाद की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न भाषाओं में व्यक्ति की भावनाओं और दृष्टिकोण को समझने में मदद करता है। भारत एक ऐतिहासिक रूप से भिन्न भाषाओं, जाति-धर्म और संस्कृतियों का समृद्ध और विविध देश है। संसद में अनुवाद उन लोगों की आवाज़ को सुनने का एक माध्यम होता है जो विभिन्न भाषाओं में बात करते हैं। यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि हर क्षेत्र, हर जाति और हर भाषा की प्रतिनिधित्व हो संसद में।

महत्वपूर्ण दृष्टिकोण :
संसद में अनुवाद का महत्व एक समृद्ध और संवेदनशील लोकतंत्र की नींव है। यह वहाँ के लोगों की भावनाओं को समझने में मदद करता है, जो विभिन्न भाषाओं में बात करते हैं। यह न केवल भारत की विशेषता को दर्शाता है, बल्कि यह भारत के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संसद में अनुवाद के महत्व का एक अन्य पहलू यह है कि यह वहाँ के लोगों को सामाजिक और राजनीतिक विचार में संज्ञान दिलाता है। जब लोग अपनी भाषा में अपनी बात करते हैं, तो उनकी आत्म-समर्पणता और सामाजिक सहभागिता में वृद्धि होती है।

महत्वपूर्ण चुनौतियाँ :
हालाँकि, संसद में अनुवाद का मामला आसान नहीं है। यह कठिनाइयों और चुनौतियों से भरा हुआ है। पहली चुनौती भाषा की विविधता है। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं और संसद में इन सभी भाषाओं का समाहरण करना एक बड़ी चुनौती है। इसके लिए उच्च गुणवत्ता के अनुवादक की आवश्यकता होती है।

दूसरी चुनौती भाषा के सही अर्थ को संस्कृत, भावनात्मक संदेशों के साथ संबोधित करना है। भाषा का अनुवाद केवल शब्दों को एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलने का काम नहीं है, बल्कि यह उस भाषा की भावनाओं और संकेतों को समझने का काम है। यह उत्कृष्टता की आवश्यकता रखता है और अनुवादकों के लिए यह एक आंतरिक चुनौती प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष :
संसद में अनुवाद भारतीय लोकतंत्र के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है जो विभिन्न भाषाओं में बातचीत की गहरी एकता को प्रस्तुत करता है। यह न केवल सामाजिक समरसता की ओर पहुँचने में मदद करता है बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास के लिए आवश्यक प्रक्रिया भी है। हमें सुनिश्चित करना होगा कि संसद में अनुवाद का प्रक्रियात्मक, नीतिक और विधिपरक मामले में सुनिश्चित उपयोग होता है ताकि हम सभी भाषाओं में बातचीत को समृद्ध बना सकें। यह संसद की जानकारी, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं का एक हिस्सा है।

Ans 3) बैंकिंग अनुवाद का महत्वपूर्ण कौशल है जो वित्तीय सेवाओं के अंतरराष्ट्रीय प्रक्रियाओं को सुनिश्चित करने में मदद करता है। यह अनुवादकों को विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और कानूनी निर्देशों के बीच संवाद करने की क्षमता प्रदान करता है। हालांकि इस कौशल का महत्व बढ़ गया है, बैंकिंग अनुवाद के कई चुनौतियाँ हैं जिन्हें अनुवादकों को पार करना होता है।

i) विशेषज्ञता की आवश्यकता : बैंकिंग अनुवादकों को वित्तीय शब्दावली, संविदानिक दस्तावेजों और वित्तीय प्रक्रियाओं के बारे में गहरी जानकारी होनी चाहिए। वित्तीय शर्तों का अनुवाद करने के लिए विशेष विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

ii) संविदानिक दस्तावेज : बैंकिंग अनुवाद के दौरान अनुवादकों को संविदानिक दस्तावेजों का सही रूप से अनुवाद करना होता है जैसे कि करारनामे दस्तावेज, निवेश प्रस्तावना, और बैंक के नियम और विधियाँ। इन दस्तावेजों का अच्छा अनुवाद करना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे वित्तीय लेन-देन को साकार और कानूनी बनाते हैं।

iii) नौकरी का बढ़ता दबाव: बैंकिंग अनुवाद काम की माँग में वृद्धि हो रही है और इसके परिणामस्वरूप अनुवादकों पर अधिक दबाव पड़ रहा है। बैंकिंग संस्थान अपने ग्राहकों को सही और स्पष्ट जानकारी प्रदान करने के लिए बढ़ते हैं, और इसीलिए अनुवादकों से उच्च गुणवत्ता वाले अनुवाद की आवश्यकता होती है।

iv) भाषाई और सांविदानिक तरीके से सटीकता: बैंकिंग अनुवाद में सटीकता की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक छोटी सी गलती या अस्पष्टता ग्राहकों के लिए नुकसानकारक हो सकती है, और इससे कानूनी संघर्ष भी हो सकता है।

v) वित्तिय तंत्र में बदलते नियमों का समझना: बैंकिंग और वित्तिय तंत्र में नियम विधियाँ निरंतर बदलती रहती हैं। अनुवादकों को इन बदलते नियमों को समझने के लिए तैयार रहना होता है ताकि वे अपने अनुवादों में उन्हें शामिल कर सकें।

vi) गोपनीयता और सुरक्षा का ख्याल करना: वित्तिय लेन-देन की जानकारी गोपनीय होती है, और इसकी सुरक्षा केन्द्रीय मुद्दा होती है। बैंकिंग अनुवादकों को इस सुरक्षा का सख्ती से पालन करना होता है।

vii) वित्तीय प्रतिरक्षा की चुनौतियाँ : बैंकिंग अनुवादकों को वित्तीय प्रतिरक्षा के नियमों और प्रक्रियाओं का समझना होता है। वित्तीय प्रतिरक्षा का मकसद वित्तीय लेन-देन की सुरक्षा और विश्वसनीयता सुनिश्चित करना होता है, और अनुवादकों को इसमें सहायक होना होता है।

viii) तकनीकी चुनौतियाँ : वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में तकनीकी बदलाव हो रहे हैं और इसके परिणामस्वरूप अनुवादकों को भी तकनीकी चुनौतियों का सामना करना होता है। उन्हें नवीनतम तकनीकों का ज्ञान रखना होता है ताकि वे वित्तीय सेवाओं को सही तरीके से अनुवाद कर सकें।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए बैंकिंग अनुवादकों को संविदानिक दस्तावेजों के लिए गहरी जानकारी, वित्तीय मंत्र में बदलते नियमों के लिए तैयार रहने के लिए और तकनीकी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होता है।

Ans 4) क) पर्यटन साहित्य का अनुवाद करना एक विशेष कला है जो भाषा, संस्कृति और भावनाओं को सही ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता को माँगता है। पर्यटन साहित्य का अनुवादक कार्य यात्रीगण को अन्य भाषाओं में समझाने में सहायक होता है, जिससे उन्हें उनकी यात्रा का पूरा अनुभव हो सके। एक अच्छे पर्यटन साहित्य- अनुवादक में कई गुण होने चाहिए।

पहला और सबसे महत्वपूर्ण गुण भाषा का गहरा ज्ञान है। अनुवादक को भेद रूप से जानना चाहिए कि वह किसी भी दो भाषाओं को समझता है और उन्हीं सही संदेश को समर्पित करने में सक्षम है।

दूसरा गुण भावनात्मक संवेदनशीलता है। पर्यटक न केवल जगहों को देखना चाहते, बल्कि उन्हें स्थानीय संस्कृति, लोकनृत्य, और रसोई की खासियत भी जाननी होती है। अच्छा अनुवादक समय- समय पर उनकी भावनाओं को समझता है और उन्हें सही रूप में प्रस्तुत करता है।

तीसरा गुण लेखन कौशल है। पर्यटन साहित्य का अनुवाद करने के लिए अच्छी रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। शब्दों का चुनाव, वाक्य-रचना, और व्याकरण की सहीता को ध्यान में रखकर अनुवाद को व्यवस्थित और सुगम बनाना आवश्यक है।

इन गुणों के संयोजन से ही एक पर्यटन साहित्य-अनुवादक सफल हो सकता है। उसका यह कार्य न केवल भाषाओं का अनुवाद करना होता है, बल्कि संस्कृति, ऐतिहासिक महत्व और लोकप्रिय धार्मिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को भी समझकर यात्रीगण को जानकारी प्रदान करना होता है। इसीलिए, पर्यटन साहित्य-अनुवादक से यह समझाना है कि उसके पास भाषाई कुशलता, भावनात्मक संवेदनशीलता, लेखन कौशल, और विश्वसनीयता जैसे गुण होने चाहिए, ताकि वह पर्यटकों को सही रास्ता दिखा सके और उनकी यात्रा को अनुपम अनुभव बना सके।

ख) विधि एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो समाज के नियमों, व्यवस्था और न्याय की सुरक्षा में मदद करता है। हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा है और उसका महत्व विधि के क्षेत्र में भी है। हिंदी में विधि की पढ़ाई और उसमें विचार-विमर्श करने से विद्यार्थियों को अपनी भाषा में ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे वे विधि के क्षेत्र में अध्ययन करने के लिए प्रेरित होते हैं।

हिंदी में विधि के क्षेत्र में अनेक प्रमुख निर्णय हुए हैं जो न्याय के लोगों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। संविधान, कानूनी संरचना, नियम, आपराधिक कानूनी कार्यवाही और न्यायिक प्रक्रिया आदि के क्षेत्र में हिंदी में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा, हिंदी में विधि के क्षेत्र में लेखन करने से विशेषज्ञता विकसित की जा सकती है, जो विशेष पेशे और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

विशेषतः भारत में अनेक राज्यों में हिंदी का प्रयोग कानूनी दस्तावेज है। यह विशेष रूप से सामान्य जनता के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में समझने में मदद करता है।

इसके अलावा, हिंदी ने विधि के क्षेत्र में प्रशासनिक और कानूनी सेवाओं में कार्यरत लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अधिकांश सरकारी कार्यालयों और न्यायिक संगठनों में हिंदी का प्रयोग होता है ताकि लोग अपनी भाषा में समय-समय पर कानूनी सहायता प्राप्त कर सकें।

समापनस्वरूप, हिंदी विधि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इस समाज में न्याय, अन्याय के खिलाफ लोगों में जागरूकता फैलती है। हिंदी की विकसशीलता से निकलकर भारतीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है जिससे देश की सामाजिक और आर्थिक विकास हो सके।

Ans 5) i) Quasi - Permament - अप्रासंगिक स्थायी

ii) Relief and rehabilitation - सहायता और पुनर्वास

iii) Security deposit - सुरक्षा जमा

iv) Standing order - स्थायी आदेश

v) Travelling allowance bill - प्रवास भत्ता बिल

vi) utilization Certificate - उपयोग प्रमाण पत्र

vii) Verbal agreement - मौखिक समझौता

viii) underground rail - भूमिगत रेल

ix) inspection Certificate - निरीक्षण प्रमाण पत्र

x) Rural works Programme - ग्रामीण कार्यक्रम

xi) Advance Copy - प्राथमिक प्रति

xii) Budget grant - बजट सुनवाई

xiii) Drawing and disbursing - खींचने और वितरण

xiv) Dispatch register - निर्गम पंजी

xv) Introductory lecture - प्रस्तावना व्याख्यान

xvi) Informal education - अनौपचारिक शिक्षा

xvii) Joint resolution - संयुक्त संकल्प

xviii) Polling station - मतदान स्थल

xix) notification - सूचना

xx) fiscal Policy - राजकोषीय नीति

Ans 6.) i) सुविधानुसार।

ii) भविष्य के पदोन्नति पर प्रतिबंध।

iii) जाँच करके सही पाया गया।

iv) दिन-प्रतिदिन प्रशासनिक काम।

v) व्याख्या की आवश्यकता हो सकती है।

vi) नियमों द्वारा नियंत्रित।

vii) उसका अनुरोध ठीक है।

viii) निर्धारित तरीके से।

ix) मामला विचाराधीन है।

x) कृपया निर्धारित तिथि से पहले पूरा करें।

Ans 7) A. संविधान केवल एक निष्प्राण पुस्तक नहीं है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है। यह संचालन संस्थाओं को देखता है और इसका महत्व केवल यह है कि यह किस तरीके से संचालित होता है और इसके द्वारा किसका संचालन होता है। नागरिक संविधान से जुड़े हुए हैं, जैसे कि यह उनके जीवन को कैसे प्रभावित करता है, जैसे कि यह उनका प्रशासन कैसे रहता है। जबकि किसी दस्तावेज एक निष्क्रिय चीज होती है, वहीं संविधान एक जीवंत गतिशील वास्तविकता है। यह हमेशा विकसित हो रहा है। भारतीय संविधान का विकास और आकार लेते हुए ही सर्वाधिकतम स्वतंत्रता से पहले हो रहा है। और यह स्वतंत्रता के बाद भी 1947 में या 26 जनवरी 1950 के बाद भी बनाया जा रहा था। भारतीय संविधान के 14 संविधान में हर नागरिक के रूप में गणराज्य के मौलिक कर्तव्यों का उल्लेख है। हर नागरिक का पहला कर्तव्य है कि यह संविधान का पालन करे और इसके आदर्शों और संस्थाओं का सम्मान करे, लेकिन, कितने भारतीय नागरिक, शिक्षिता में भी, पहले यह जानते हैं कि मौलिक कर्तव्यों के लिए एक अलग भाग होता है?

(3) भारत में खुदरा क्षेत्र एक प्रमुख क्षेत्र माना जाता है जो जीडीपी के लगभग 10% का योगदान देता है, साथ ही यह देश में उत्पन्न होने वाले रोजगार के लगभग 8% का दान करता है, हालांकि भारत में खुदरा क्षेत्र विशाल, आयोजित खुदरा व्यापारियों और छोटे - मध्यम खुदरा व्यापारियों में विभाजित है यह एक बड़े श्रमिक बल का उपयोग करता है, जिसमें 40 मिलियन से अधिक लोगों की बड़ी संख्या शामिल है। भारतीय उद्योग एकत्रीकरण संघ की रिपोर्ट के अनुसार, एक संरचित गतिशील खुदरा नीति से 2024 तक 3 मिलियन से अधिक नौकरियों की उत्पत्ति की जा सकती है। खुदरा एक लोग - प्रवृत्ति उद्योग है जो अधिकांश खरीदों के ग्राहकों की दृष्टिकोन से चलता है, इसीलिए अधिकांश कंपनियाँ क्षमता विकसित करने की कोशिश करती है, क्योंकि आज की प्रतिस्पर्धा बाजार में अन्य संसाधन को नकल किया या मानकीकृत किया जा सकता है, सुनिश्चित करती है कि उद्योग में कुशल मानव श्रम की माँग मजबूत रहती है। पिछले दशक में, खुदरा में स्थिर विकास और ई-व्यापार में भी 2017 में 795 अरब डॉलर

से 2026 में 1.75 ट्रिलियन डॉलर की सीमा को पार करने वाले विकास के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में 2019 में 30 अरब डॉलर से 2026 में 200 अरब डॉलर का मूल्य होने के साथ 30% का वृद्धि एक बड़ी रोजगार के अवसर की बड़ी गेटवे खोला है, क्योंकि खुदरा सामग्रियों और सेवाओं की खपत आने वाले वर्षों में बढ़ने की प्रत्याशा की जा रही है।

7.c) सरकार ने खुद को लोकपाल कानून के अंतर्गत घोषणा को लागू करने के लिए 90 दिन की राहत दी है और सरकार के सेवकों को उनके पद के बावजूद हर साल अपनी संपत्ति और लाभ - हानि की घोषणा करनी होगी, केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए संपत्ति की घोषणा जनमानस में की जाएगी।

सरकारी स्रोतों के मुताबिक, विभिन्न सेवाओं और श्रेणियों के लिए नैतिकता नियम विभिन्न कई नियंत्रण प्राधिकरणों से प्राप्त सुझावों के प्रकार के मेल न होने के बावजूद, अधिक समय देने के लिए आदेश जारी किए गए। अपनी ओर, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग ने इस संबंध में जनमानस सेवकों द्वारा फॉलो किए जाने वाले निर्देशों और भूमिका नियमों को तय किया है। 2013 के लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम ने हर लोक सेवक को वार्षिक घोषणा करना अनिवार्य बना दिया था और केवल मौजूदा है घोषणा के तहत की आवश्यकता नहीं थी।

पिछले सप्ताह DOPT द्वारा नोटिफाई किए गए नियमों के तहत, प्रणालीगत प्राधिकरण के छोटे मौद्रिक वेतन या 2 लाख रुपये

से कम मूल्य की संपत्ति की घोषणा करने से सेवकों को मुक्ति प्रदान करने का विवादित अधिकार होगा। सरकारी अधिकारी ने कहा कि मुक्ति वस्तुतः इसीलिए शामिल की गई है क्योंकि पारदर्शिता में सुधार करने का प्रयास सरकारी सेवकों को परेशान न करे।
DOPT ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों में उम्मीदवारों द्वारा जमा की जाने वाली संपत्ति और लाभ-हानि की घोषणा फॉर्म को बदलने के लिए डिजाइन किया है।

"फॉर्मों का मूल संस्करण अधिकारियों को अनुमानित जानकारी प्रदान करने या कुछ जानकारी को छोड़ने के लिए आग्रह छोड़ता था। इस नए प्रारूप में ऐसा संभव नहीं होगा," एक सरकारी अधिकारी ने कहा, जिसमें उनके द्वारा, पति और आश्रितों के द्वारा स्वामित्व में जंगरी के वजन और मूल्य की घोषणा करने की आवश्यकता होती है। सरकारी अधिकारियों द्वारा उनकी संपत्ति की घोषणा करने की प्रथा — और उनकी अपाण संपत्तियों के बारे में जानकारी को सार्वजनिक कर देने का — केवल कुछ साल पुरानी है।

Ans 8:) आज के युवा शिक्षा प्राप्त करते हैं और साथ ही एक मानसिकता भी बनाते हैं कि वे नौकरी करेंगे, न कि मालिक बनेंगे। इस मानसिकता के कारण, उन्हें आज के समय में बढ़ती हुई आबादी के साथ-साथ होने वाली नौकरियों की सीमा के कारण सदैव समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि युवाओं को शिक्षा के साथ-साथ कौशल का विकास भी करना चाहिए ताकि वे स्व-रोजगार को अपना सकें और न केवल खुद को स्वावलंबी बना सकें, बल्कि अपने साथियों को भी रोजगार प्रदान कर सकें।

आज के दौर में युवाओं को यह सोचना चाहिए कि जब वे खुद मालिक बनेंगे, तो वे दूसरे लोगों को रोजगार देने के लिए सक्षम होंगे। इस सोच के साथ शिक्षा के साथ-साथ स्व-रोजगार की ओर ध्यान देना आज की आवश्यकता है। इसीलिए युवाओं को स्व-रोजगार के लिए कौशल विकास केन्द्र और अन्य समर्थन केंद्रों की ओर ध्यान देना चाहिए जो तकनीकी रूप से उन्हें स्वावलंबी बनाने में मदद कर सकते हैं और स्व-रोजगार को अपनाने के साथ-साथ

अपने परिवार और समाज के अन्य युवाओं को भी स्वावलंबी बनाने का कार्य करें।

स्वावलंबन के लिए अनेक क्षेत्र हैं जिनमें रुचि के अनुसार कौशल प्राप्त कर अपने जीवन को सरल और सुखद बनाया जा सकता है। स्व-रोजगार की शुरुआत करते समय, कौशल विकास केन्द्रों में प्राप्त शिक्षा का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।